RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 35 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 5 फरवरी 2024 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

लोकसभा चुनाव की रामलीला

उत्तराखण्ड में विपक्ष भी पूरी तैयारी में

अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा के बाद भी अभी लगातार माहौल बना हुआ है। जौलजीवी में श्रीराम की झांकी का दृश्य

अयोध्या राम मंदिर को लेकर धूम
भाजपा की एकमात्र रटन
खड़गे के दौरे से कांग्रेसी जोश
विपक्ष एकजुट की कोशिश जारी

कार्यालय प्रतिनिधि

अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा उत्सव के बाद गणतन्त्र दिवस का उत्साह भी देश मना चुका है लेकिन अयोध्या राम मन्दिर को लेकर चारों ओर पूरा माहौल दिखाई दे रहा है। इसके पीछे 2024 लोकसभा चुनाव भी घूम रहा है। उत्तराखण्ड में तो पक्ष-विपक्ष रमे हुए हैं। कांग्रेस मुख्यालय देहरादून में सभी घटक दलों एवं सिविल सोसोइटी के प्रतिनिधियों की बैठक में तमाम मुद्दों पर सहमति व्यक्त करते हुए भाजपा पर निशाना साधा गया। आरोप लगाया कि भाजपा मन्दिर की आड़ में अपना चुनावी प्रचार कर रही है। मन्दिर को पूरी तरह राजनीति का हिस्सा बनाकर समाज में टूटन की जा रही है। दूसरी ओर प्राण प्रतिष्ठा के बाद उत्तराखण्ड भाजपा अब अयोध्या राम मन्दिर दर्शन अभियान शुरू करने जा रही है। इसके तहत प्रदेश की हर लोकसभा से छह हजार भक्तों को रामलला दर्शन के लिए अयोध्या ले जाया जाएगा। भाजपा इसके लिए अभियान चला रही है। इसके तहत राज्य के करीब 30 हजार पार्टी कार्यकर्ता व रामभक्तों को रामलला के दर्शन कराए जाएंगे। असल में भाजपा ने मकर संक्रान्ति से ही अपना यह अभियान आरम्भ कर दिया था। इस क्रम में अब पार्टी आगे के कार्यक्रमों को तेज कर चुकी है। इसमें लोगों को स्पेशल ट्रेन-बसों से अयोध्या ले

शेष पृष्ठ 6 पर

82,37,025 मतदात आम चुनाव में लेंगे भागीदारी

हल्द्वानी। लोकसभा चुनाव की तैयारियों में प्रशासनिक अमला चुस्त दिखाई दे रहा है। मुख्य निर्वाचन अधिकारी डॉ. वी. षामुराम ने लोकसभा चुनाव के मद्देनजर मतदाताओं की अन्तिम सूची जारी की। आंकड़ों के अनुसार 8143501 मतदाता आम चुनाव में हिस्सा लेंगे। इसमें 428089 पुरुष, 3925143 महिला एवं 269 ट्रासंजेंडर मतदाता हैं। वहीं 93524 सर्विस मतदाता हैं। जिनमें 90927 पुरुष व 2597 महिला मतदाता शामिल हैं। इस तरह कुल 8237025 मतदाता संसद के लिये सदस्यों का चुनाव करेंगे।

आकड़ों से पता चलता है कि सबसे अधिक मतदाता देहरादून में 499893 और सबसे कम रुद्रप्रयाग में 193734 हैं। देहरादून के बाद हरिद्वार में 425828, ऊधमसिंह नगर में 2926, नैनीताल में 774906, पौड़ी में 571706, अल्मोड़ा में 53195, टिहरी में 526543, पिथौरागढ़ में 368592, चमोली में 298413, उत्तरकाशी में 241201, बागेश्वर में 216527, चम्पावत में 203837 मतदाता हैं।

प्रदेश में सबसे ज्यादा सर्विस मतदाता पौड़ी में 15900 हैं जबकि हरिद्वार में सबसे कम 2260 हैं। इसके बाद पिथौरागढ़ में 4455, चमोली में 10348, देहरादून में 9825, अल्मोड़ा में 7224, ऊधमसिंह नगर में 5970, टिहरी में 5755, नैनीताल में 5419, रुद्रप्रयाग में 5300, बागेश्वर में 4505, उत्तरकाशी में 3347, चम्पावत में 3116, हरिद्वार में 2251 मतदाता हैं।

प्रदेश में 729 बूथों पर मतदान होगा जिसमें सिर्फ चार जिले हैं जिसमें एक हजार से अधिक बूथ हैं। निर्वाचन आयोग के आंकड़ों के अनुसार सबसे ज्यादा बूथ देहरादून में 1880, हरिद्वार में 1713, ऊधमसिंह नगर में 464, नैनीताल में 1010 हैं। वहीं टिहरी में 963, पौड़ी में 945, अल्मोड़ा में 920, पिथौरागढ़ में 61, चमोली में 592, उत्तरकाशी में 544, बागेश्वर में 381, रुद्रप्रयाग में 362, चम्पावत में 344 बूथ बनाए गए हैं।

मुनस्यारी की राजमा को मिला जीआई टैग

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

मुनस्यारी शहर (2,200 मीटर), जो जोहार घाटी के प्रवेश द्वार पर स्थित है, यहीं से इसका नाम पड़ा। 1962 के भारत-चीन युद्ध से पहले यह तिब्बत के साथ एक महत्वपूर्ण व्यापार मार्ग था। इन क्षेत्रों में भारी बर्फबारी के कारण, कई बस्तियों में केवल मई से नवम्बर की शुरुआत तक ही कब्जा रहता है। राजमा आमतौर पर वसन्त ऋतु में एक महत्वपूर्ण खरीफ दाल के रूप में उगाई जाती है। अन्य किस्मों के विपरीत, मुनस्यारी राजमा बड़ा होता है और उसका रंग असामान्य सफेद होता है। ये अपने स्वादिष्ट स्वाद और उच्च प्रोटीन और फाइबर सामग्री के लिए जाने जाते हैं। उत्तराखण्ड में मुनस्यारी की राजमा का जलवा है। शादी, विवाह हो या फिर कोई अन्य कार्यक्रम सभी में मुनस्यारी की राजमा की मांग रहती है। इधर अब मुनस्यारी के राजमा को जियोग्राफिकल इंडेकेशन यानी जीआइ टैग मिलने से राजमा के उत्पादन से लेकर गुणवत्ता तक में अधिक सुधार आने के लिए आसार बन चुके हैं। सात हजार फीट से अधिक ऊँचाई वाले गांव क्वीरी, जीमियां, साईपोलू, ल्वां, बोना, तोमिक, गोल्ा, नामिक, बुई, पातों, निर्तोली, झापुली सहित उच्च हिमालयी आदि गाँवों में पैदा होने वाली राजमा को मुनस्यारी के राजमा नाम से जाना जाता है। अपने स्वाद के चलते विशेष पहचान रखती है। मैदानी क्षेत्रों में पैदा होने वाली राजमा से आकार में कुछ बड़ी सीमान्त की राजमा पूरी तरह जैविक तरीके से उत्पादित की जाती है। इसके उत्पादन में किसी तरह की रासायनिक खाद का उपयोग नहीं होता है। हिमालयी क्षेत्र में उत्पादित यह राजमा पौष्टिक गुणों से भरपूर है। इन्हीं गुणों के चलते पूरे उत्तर भारत में इसकी मांग है, हालांकि मांग की तुलना में उत्पादन सीमित है। इसके चलते मुनस्यारी, पिथौरागढ़ और अब हल्द्वानी के बाजारों तक ही यह पहुँच पाती है। मुनस्यारी के लोग उत्तर भारत के विभिन्न इलाकों मे रहने वाले अपने नाते रिश्तेदारों और परिचितों को राजमा उपलब्ध कराते हैं। मुनस्यारी आने वाले पर्यटक भी मुनस्यारी की राजमा के स्वाद के दीवाने हैं। जिसके चलते मुनस्यारी की राजमा की चर्चा देश ही नहीं विदेशों तक होती है। इस विशिष्ट राजमा का स्वाद अब विदेशियों को भी भाने लगा है। मुनस्यारी पहुँचने वाले विदेशी सैलानियों को जब भोजन में राजमा परोसी जाती है तो वे इसके बारे में जानकारी लेते हैं और इसके बनाने की विधि सीखकर इसे अपने साथ ले जाते हैं। बीते वर्षों में यहाँ पहुँचे तमाम विदेशी सैलानी राजमा की खरीदारी कर रहे हैं। मुनस्यारी में राजमा का उत्पादन सदियों से होता आया है। अतीत में मुनस्यारी की राजमा केवल मुनस्यारी के राजमा उत्पादक गाँवों तक ही पहचान रखती थी। तब मुनस्यारी तक मोटर मार्ग नहीं थे। यहाँ तक बाहरी लोगों की आवक नहीं के बराबर रहती थी। यहाँ पर अलग-अलग रंग की परन्तु स्वाद में एक समान राजमा का उत्पादन होता था लेकिन उत्पादक इसे अपने घरेलू उपयोग के अलावा नाते, रिश्तेदारों को देने तक ही करते थे। मुनस्यारी तक जब पहुँचना सरल हो गया तो इसका स्वाद अन्य क्षेत्र के लोगों को भी मिलने लगा। इसका स्वाद चखने वाले इसके मुरीद होते गए। आज भी स्थिति यह है कि लोग राजमा की फसल तैयार होते ही राजमा खरीदने के लिए राजमा उत्पादक गाँवों तक पहुँच जाते हैं। राजमा उत्पादक काश्तकार हैं। गोल्फा

शेष पृष्ठ 2 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

मूल निवास व भू कानून की चिंगारी बनी रहेगी

मूल निवास भू कानून समन्वय संघर्ष समिति ने हल्द्वानी में महारैली कर फिर से ताकत दिखाई है। देहरादून के बाद हल्द्वानी में हुए इस प्रदर्शन से यह तो साफ हो चुका है कि मूल निवास व भू कानून की चिंगारी बनी रहेगी, लिहाजा सरकार इस पर अपना स्पष्ट निर्णय दे।

दो सौ से अधिक संगठनों के समर्थन के साथ हल्द्वानी में जिस प्रकार से लोगों ने रैली निकालते हुए अपनी बात रखी उससे स्पष्ट है कि पर्वतीय मूल निवासी महसूस करने लगे हैं कि उत्तराखण्ड राज्य बनने के बाद भी उन्हें बहलाया जा रहा है। यहाँ का निवासी होने के बावजूद निवासी प्रमाण पत्र और जमीनों के मामले में सजग होना जरूरी है।

आरोप लगाया जा रहा है कि जिस उत्तराखण्ड मूल निवासियों के संसाधनों पर बाहरी लोग कब्जा कर रहे हैं उसमें और भी बढ़ोत्तरी हुई है। समिति के संयोजक ललित डिमरी मान रहे हैं कि जिस प्रकार अन्य राज्यों से भी पर्वतीय मूल के लोग रैली में पहुँचे हैं उससे यह आम जन का आन्दोलन है। लोग अस्तित्व, अस्मिता, संसाधन, रोजगार, जमीन और भावी पीढ़ी के भविष्य को सुरक्षित करने के लिये इससे जुड़ रहे हैं। सह संयोजक एल. टोडरिया कहते हैं कि ई रिक्शा घोटाला राज्य के मूल नागरिकों पर हो रहे अत्याचार का ज्वलंत उदाहरण है। सहकारी बैंक ने स्थायी निवास प्रमाण पत्र, आधार कार्ड देखे बिना ही बाहरी लोगों को ऋण बांट दिया। यदि जनता अभी भी एकजुट नहीं हुई तो आन्दोलन से बने इस राज्य के मूल निवासियों का अस्तित्व पूर्ण रूप से समाप्त हो जायेगा।

हल्द्वानी की इस महारैली के आलावा भी प्रदेश में जगह-जगह भू कानून व मूल निवासी के मसले पर लगातार आवाज उठाई जा रही है। बहुत ही सीधी सी बात है कि जो लोग हमेशा से यहाँ रह रहे हैं उन्हें मूल निवासी का प्रमाण पत्र क्यों? उन्हें तो मानना ही चाहिये। दूसरा, जमीनों की धन्धेबाजी में कपटता बन्द हो। इसके लिये जन-जन को जागरुक हो जाना चाहिये।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

अमेरिका में दो और भारतीय वाणिज्य दूतावास

अमेरिका में भारत के निवर्तमान राजदूत तरनजीत सिंह सन्धू ने कहा कि भारत अमेरिका के सम्बन्ध न केवल दोनों देशों बल्कि पूरी दुनिया की भलाई के लिए अहम हैं। अमेरिका में जल्द ही दो और भारतीय वाणिज्य दूतावास खुलेंगे।

महिलाओं पर तालिबान का अत्याचार

अफगानिस्तान में तालिबानों की महिलाओं पर क्रूरता बढ़ती जा रही है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार तालिबान अफगान अविवाहित महिलाओं की काम, यात्रा और स्वास्थ्य देखभाल तक पहुँच को प्रतिबन्धित कर रहा है।

यूएनएससी में भारत को मिले स्थायी सीट

दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति और टैस्ला व स्पेसढक्स जैसी कम्पनियों के मुखिया एलन मस्क ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता की वकालत की है। कहा कुछ बिन्दुओं पर यूएनएससी में बदलाव करने की जरूरत है।

तटरक्षक बल की बढ़ेगी ताकत

रक्षा मंत्रालय ने भारतीय तटरक्षक बल (आईएसजी) के लिये 14 तेज गति वाले गश्ती जहाजों की खरीद को मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किये हैं। इससे तहटरक्षक को नए युग की बहुआयामी चुनौतियों का सामना करने के लिये बल मिलेगा।

रैली में शेर लेकर पहुँचे समर्थक

पाकिस्तान में जल्द ही आम चुनाव के लिये मतदान होगा। ऐसे में पार्टियों का प्रचार जारी है। नवाज शरीफ की रैली में पीएमएलएन समर्थक असली शेर लेकर पहुँच गये। खुली गाड़ी में पिंजड़े में बन्द शेर को घुमाया गया। इसकी काफी आलोचना हो रही है। नवाज शरीफ ने भी नाराजगी जताई है।

कर्मचारी से पहने जूते, तबादला

भोपाल। सिंगरौली के चितरंगी तहसील अन्तर्गत पदस्थ एसडीएम चितरंगी की महिला कर्मचारी से खुद के पैर में जूता पहनाते हुए फोटो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद सीएम ने एसडीएम को हटाने के निर्देश दिये। इस प्रकार एसडीएम का तबादला हुआ।

ध्रुवीय भंवर से कई देशों में कड़ाके की ठंड

जलवायु परिवर्तन ने कड़ाके की ठण्ड के रूप में मौसम को जन्म दे दिया है। वैज्ञानिकों ने बताया है कि यह ध्रुवीय भंवर कुछ देशों में पहुँचने लगे हैं।

फसक

दाज्यू, मौका देखकर हकाहाक होने वाली ठैरी

नारेबाजी, मांग, धरना-प्रदर्शन तो होता रहता है बल

दाज्यू, हमारे पड़ोस में प्रतिदिन मुनिया, चैतू और सुज्जन भजन गा रहे हैं- 'मेरी झोपड़ी के भाग जग जाएंगे'। दाज्यू, अयोध्या में उत्सव के बीस दिन पहले से ही ही भैरु और बिल्लू भी झण्डा लेकर जैश्रीराम के नारे लगाने लग गया था। भैरु की मोटर साइकिल में बड़ा वाला झण्डा लहरा रहा है। दाज्यू, सब ठीक हो रहा है। मौका देखकर हकाहाक होने वाली ठैरी। जुलूस वाले दिन शहर में बेसुमार भण्डारे होने लगे, खीर-हलुवा-पूड़ी-खिचड़ी जिधर तिधर खाकर हमारा मामला टाइट चल रहा है। बस इन्तजार है हमारी झोपड़ी के भाग खुल जाएं, बरसात में पानी भर जाता है और सालभर दीमक बर्बादी कर रही है।

भौंकाल सिंह का धरना-प्रदर्शन जारी है। कह रहा है- 'डबल इंजन धुंआ छोड़ रहा है। बर्बादी हो रही है।' दाज्यू, आप चिन्ता मत करो। नारेबाजी, मांग, धरना प्रदर्शन हो होता रहता है बल। जसपुर के एक लॉ कालेज मालिक पर सहायक प्रोफेसर ने धमकाने का आरोप लगाया है। दाज्यू, प्रोफेसर का कहना है- 'महाविद्यालय का वातावरण देख उन्होंने नौकरी छोड़ दी। कालेज ने वेतन का बचा 5000 रुपया देना है, मांगने पर मालिक ने धमकी दे डाली।' दाज्यू, हम तो पहले से कह रहे हैं कि तराई में कई कालेज चल रहे हैं जो पैनल के समय दाल-भात-लिफाफा के साथ अपने कागज पक्के कर रहे हैं। जहाँ नोट की चोट हो वहाँ हकाहाक बन्द भी हो सकती है किन्तु आग-पानी-हवा को कौन रोक पाया? सुना है अल्मोड़ा के दस नौले-धारों का पानी पीने लायक नहीं रहा। इनमें कोलीफॉर्म वैक्टीरिया माजूद है बल। दाज्यू, हर जगह मिलावट है तो जलस्रोत कैसे बचेंगे। पौड़ी के महाराज अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय की फर्जी मार्कशीट पकड़ में आने से बबाल मचा हुआ है। आँखिर यह सब क्या होता जा रहा है। हल्द्वानी की लामाचौड़ी चौकी में जुआ खेल रहे चौकी प्रभारी सहित पूरी चौकी को लाइन हाजिर कर दिया। किसे पता था कि एसएसपी आधी रात को छापेमारी करेंगे और गश्त छोड़ जुआ खेल रहे पुलिस वालों को लाइन हाजिर होना पड़ेगा। क्या कहें, क्या न कहें। गरुड़ स्थित प्रसिद्ध बैजनाथ मन्दिर से पूजा के बर्तन चोरी हो गये बल।

दाज्यू, खटीमा में बाबा भारामल मन्दिर के महन्त बाबा हरिगिरी और सेवादार की हत्या के चश्मदीद नन्हें की संदिग्ध परिस्थिति में मौत हो गई। निर्माण कुटिया के पीछे नाले में शव बरामद हुआ। दाज्यू, बहुत खतरनाक होने लगा है। गला काट खेल में शामिल लोगों की पकड़ होनी चाहिये। वरना तो इन हालातों में दुनिया से ही भरोसा उठ जाएगा। जैसे तैसे दिन काट रहे लोगों को सुरक्षा पहले जरूरी है। पार्टी वालों को चुनाव ही दिख रहा है। -तुम्हारा भुली झकरुवा

मुनस्यारी की....

प्रथम पृष्ठ का शेष

गाँव समुद्र तल से लगभग आठ से साढ़े हजार फीट की ऊँचाई पर स्थित है। गाँव अभी मोटर मार्ग से नहीं जुड़ा है। यह गाँव राजमा उत्पादक गाँव है गोल्फा को राजमा की धाक है। काश्तकार के अलावा गाँव के दर्जनों लोग राजमा उत्पादन करते हैं। यहाँ की राजमा सबसे पहले मदकोट बाजार पहुँचती है। जहाँ से फिर मुनस्यारी, पिथौरागढ़, जौलजीबी पहुँचती है। इधर अब क्षेत्र के कुछ ग्रामीण राजमा को हल्द्वानी में लगने वाले आयोजनों तक पहुँचाने लगे हैं। राजमा को जीआइ टैग मिलने से खुशी है। काश्तकार बताते हैं कि अब उनकी राजमा को अधिक बाजार मिलेगा और उत्पादन भी बढ़ेगा। गाँवों में युवा भी राजमा उत्पादन के प्रति उन्मुख हो रहे हैं। राजमा मुनस्यारी की परम्परागत खेती है। सदियों से इसका उत्पादन हो रहा है। आज भी हम सबसे महत्व राजमा को ही देते हैं। इसी से रोजीरोटी जुड़ी है। राजमा उत्पादन में मेहनत अधिक है। मौसम भी कारक रहता है। किसी वर्ष फसल काफी अच्छी तो किसी वर्ष मौसम प्रतिकूल रहने से फसल प्रभावित होती है। राजमा को अब बाजार मिलेगा तो इसका उत्पादन भी बढ़ेगा। काश्तकार इसके लिए प्रयासरत हैं। सात हजार फीट से अधिक ऊँचाई वाले उच्च हिमालयी आदि गाँवों में पैदा होने वाली राजमा को मुनस्यारी के राजमा नाम से जाना जाता है।

अपने स्वाद के चलते विशेष पहचान रखती है। मैदानी क्षेत्रों में पैदा होने वाली राजमा से आकार में कुछ बड़ी सीमान्त की राजमा पूरी तरह जैविक तरीके से उत्पादित की जाती है। इसके उत्पादन में किसी तरह की रासायनिक खाद का उपयोग नहीं होता है। मुनस्यारी की राजमा में बहुत सारे प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और घुलनशील फाइबर से भरपूर होते हैं, साथ ही मुनस्यारी राजमा पोषक तत्वों का एक पावरहाउस है। इसके अलावा ये किडनी के आकार की फलियाँ अपनी समृद्ध बनावट और विशिष्ट सुगन्ध के साथ खाने में एक स्वादिष्ट स्वाद लाती हैं। प्रोटीन से भरपूर ये फलियाँ न केवल शानदार स्वाद प्रदान करती हैं बल्कि शरीर को आवश्यक प्रोटीन भी प्रदान करती हैं और सिस्टम के लचीलेपन को बढ़ाती हैं। मुनस्यारी राजमा भारतीय व्यंजनों में मुख्य भोजन है, जिसे मुख्य रूप से उबले हुए चावल के साथ परोसा जाता है। इसमें प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है, खनिज, मैंगनीज, तांबा का समृद्ध स्रोत होता है और इसमें आहार फाइबर होता है। मुनस्यारी राजमा प्रकृति की देन है। इसमें अन्य दालों और फलियों जैसे मटर और फलियों की तुलना में कम सूखा पदार्थ और लगभग आधा पानी होता है। राजमा की प्रोटीन युक्त गुणवत्ता भी सभी दालों और फलियों की तुलना में बहुत बेहतर होती है, जिसका श्रेय इसके नाइट्रोजन और अमीनो एसिड के उच्च प्रतिशत को दिया जा सकता महिला किसानों के रूप में पहचानी जाने वाली और इस दाल की खेती करने वाली 80 प्रतिशत से अधिक महिलाएँ सदस्य हैं। मक्के और आलू के खेतों में राजमा को मिश्रित फसल के रूप में उगाया जाता है। राजमा की अन्य किस्मों की तुलना में, इस छोटे आकार के राजमा में एक अद्वितीय और सूक्ष्म बनावट, कोमलता, मिठास और सुगन्ध होती है और इसे पकाने में 25 से 30 मिनट कम समय लगता है। अब मुनस्यारी की राजमा को जियोग्राफिकल इंडेकेशन यानी जीआइ टैग मिल गया है। इसके बाद मुनस्यारी की राजमा की धाक और बढ़ गयी है। जीआई टैग उन उत्पादों को मिलता है जो विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में पैदा होती हैं। सात हजार फीट से अधिक ऊँचाई वाले मुनस्यारी के गाँवों में यह राजमा पैदा होती है। अपने स्वाद के लिए विशेष पहचान रखती है। इसका उत्पादन जैविक तरीके से किया जाता है। यह पौष्टिक गुणों से भरपूर है। इन्हीं गुणों के चलते पूरे उत्तर भारत में इसकी मांग है, हालांकि मांग की तुलना में उत्पादन सीमित है। यही वजह है कि यह हल्द्वानी के बाजार तक ही पहुंच पाती है। गाँव निवासी गंगा सिंह बताते हैं कि राजमा मुनस्यारी की परम्परागत खेती है। सदियों से इसका उत्पादन हो रहा है। आज भी हम सबसे महत्व राजमा को ही देते हैं। इसी से रोजीरोटी जुड़ी है। राजमा उत्पादन में मेहनत अधिक है। मौसम भी कारक रहता है। किसी वर्ष फसल काफी अच्छी तो किसी वर्ष मौसम प्रतिकूल रहने से फसल प्रभावित होती है। राजमा को अब बाजार मिलेगा तो इसका उत्पादन भी बढ़ेगा। काश्तकार इसके लिए प्रयासरत हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पर्यटन

मुनस्यारी और राजू गाइड

जगदीश सिंह बृजवाल

मुनस्यारी जोहार परगने का मुख्य स्थल, सदूर भारत- तिब्बत(चीन) से लगा भू-भाग है समुद्रतल से ऊंचाई 2290 मी वह दक्षिण गोरी नदी से के तट से 2400मी है। प्राकृतिक सौन्दर्यता से भरपूर रमणीक हिमालयी क्षेत्र यहाँ आने वाले देश-विदेश के पर्यटक सामने पंचचूली हिमपर्वत के मनमोहक दृश्यावलोकन से मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। मुनस्यारी के व्युत्पत्ति के विषय में कहा जाता है कि यह स्थल शाक्यमुनि की तपस्थली भी रहा है इसलिए इसको पूर्व में 'मुनि का सेरा' भी कहा जाता था। जिसका विकास मुनस्यारी के रूप में हो गया है। तहसील मुख्यालय को पहले तिकसैन के नाम से भी जानते थे। जोहार के शौकाओं के व्यवसायी तरीके से सारा संसार, आधा मुनस्यार भी कहा जाता रहा है। मुनस्यारी पहुंचने पर पंचचूली, राजरम्भा, हिमपर्वत,हंसलिग चोटी, गोरी गंगा के चित्ताकर्षक दृश्य के अलावा डानाधार में मां नन्दा देवी मंदिर स्थल भी अति मनभावन है। पर्यटन मुनस्यारी भ्रमण में आने के लिए तीन मोटरमार्ग में से किसी एक का चुनाव कर सकते है पिथोरागढ़ मुख्यालय से कनालीछीना, ओगला, अस्कोट, जौलजीबी, बरम, बंगापानी, मदकोट मुनस्यारी . दूसरा अल्मोड़ा,कौशानी, बागेश्वर, भराड़ी, सामाधूरा, क्वीटी, बिर्थी, मुनस्यारी। अल्मोड़ा, सेराघाट, बेरीनाग, थल, नाचनी, क्वीटी, बिर्थी मुनस्यारी। पिथौरागढ़ से 120 किमी तथा अल्मोड़े से लगभग 216 किमी दूरी पर स्थित है।

मुनस्यारी पर्यटन पर आने वाले सैलानी यहाँ की सौन्दर्यता के अतिरिक्त सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक लोकजीवन, कला, इतिहास को जानने की जिज्ञासा भी रखते हैं शौका जनजातीयों के ऐतिहासिक धरोहर की वस्तुएं, लोकसाहित्य पुस्तकें मुनस्यारी से लगभग 1.5 किमी की दूरी पर अवस्थित ट्राइबल हेरिटेज मेमोरियल म्यूजियम नानासेम जैंती गाँव में अवस्थित है। जिसकी स्थापना इतिहासकार डा. शेर सिंह पांगती जी द्वारा की गई है। देखने को मिल जायेगा। मुनस्यारी के मुख्य पर्यटन स्थल तक पहुँचने तथा तथा समस्त जानकारी हेतु प्रशिक्षित अनुभवी गाइड की आवश्यकता अवश्य पड़ती है। अपने अनुभव व विषय ज्ञान रखने वाले राजू गाइड की विशेषता है।

परिचय राजू गाइड- राजू गाइड उर्फ राजेन्द्र सिंह मर्तोलिया निवासी टकाना, दरकोट जिसकी दूरी तहसील मुख्यालय से 5 किमी मोटरमार्ग पर है जिसने अपने जीवनकाल के 25 वर्ष शैलानियों के साथ गाइड रूप में व्यतीत कर दिया है. जो उत्तराखण्ड के पर्यटन विभाग से प्रशिक्षित भी है।

मृदुभाषी, व्यवहार कुशल, कर्मठ बचपन से एक दूसरे के साथ मित्रभाव-स्वभाव की लालसा ने आंखिरकार गाइड बनने तक का सफर करा दिया है। प्रारम्भ में मित्रता का शौक् में शैलानियो को जगह-जगह ले जाकर बारीकी से समस्त जानकारीया भली-भांति कराते थे जो उनका निशुल्क कार्य था। धीरे-धीरे जिसे व्यवसायिक रूप में भी अपनाना पड़ा है। राजू गाइड का परिवार आज भी अपने पैतृक कारोबार ऊनी वस्त्र बनाने के कार्य से जुड़े हुए हैं। शाल, पंखी, पश्मीना, थुलमा, कालीन, खरगोश के ऊन की टोपी आदि की उपलब्धता घर पर ही करा देते हैं स्वयं के निवास स्थान में होम स्टे साफ स्वच्छ कमरों की उपलब्धता आधुनिक सुविधाओं के साथ है, जो अतिथि स्वागत करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ता है। पर्यटकों का भ्रमण पर आने का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक सौन्दर्य का लुप्त उठाना तथा अपने अवकाश के समय का भरपूर सदपयोग कर मनोरंजन करना भी है। मनोचित्त में शान्ति लाकर जीवन को स्फूर्तिवान बनाना भी होता है। पर्यटन पर आये शैलानियों का क्षेत्र के लोकजीवन, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक सांस्कृतिक स्थिति को भी समझने की जिज्ञासा भी होती है जिस कारण उपयुक्त गाइड का चुनाव आवश्यक है।

मुनस्यारी का मुख्य पर्यटन स्थल- मुख्य पर्यटन स्थल खलिया चोटी से हिमश्रृंखलाओं का विहंगम दृश्य तथा रमणीक वादियों का दृष्टिगोचर होना मार्ग में अन्वेषक सीआईए नैन सिंह रावत पर्वतारोहण संस्थान का भी आकर्षण है बेटुलिधार मोटर मार्ग से 2 किमी की दूरी पर थामडीकुण्ड का रहस्यात्मक कहानी। बेटुलीधार के पास ही पाताल थोड(अस्थाई प्रवास स्थल) में आधुनिक ईको पार्क, सम्प्रति तहसील मुख्यालय के सामानान्तर लगभग 1.5 किमी की दूरी पर स्थित माँ नन्दा भगवती स्थल तथा प्रतिष्ठापित होने की प्राचीन गाथा, जहाँ से ही घाटी में सर्पिली गोरी नदी बेसिन की पौराणिक गाथाएं, गोरी गंगा पार चूलकोट चोटी, जहाँ मुस्यारी से मदकोट के मोटर मार्ग से पहुँचा जा सकता है। चूलकोट में निवास करने वाले मुनस्यारी के मूल जनजाति बरपटिया समुदाय के चूलकोटिया रजबारी रहस्य, मुनस्यारी से 5 किमी की दूरी दरकोट गाँव में माँ भगवती दुर्गा देवी के प्रतिष्ठापित मंदिर का रहस्य व स्थापत्य कला के भव्यता का दर्शन, प्राचीन काल के मंदिर मेसर देवता (यक्ष) द्वारा बरपटिया समाज के एक उपजाति बर्नियाओं की रूपवती कन्या अपहरण की रोचक कथा। सुनपति शौका जोहार के इतिहास पुरुष के वस्तुओं का शिलाखण्ड-भेड़-बकरी, नारी अंग वस्त्र (घागरा), करबछ के थैलों का चट्टा (दो मुंह वाले भरे सामानों का ढेर) कुत्ता शिलाखण्ड का दृश्य सुनपति शौका के निवास स्थान पिलोखान, सुरिंग चोटी से दूर बुग्यालों के बीच अवस्थित है मुनस्यारी से 10,15 किमी दूरी पर क्वीरीजिमियां गाँव के पास पश्चिम में गाँव से लगभग 2,3 किमी दूरी घने जंगल के बीच देवल ढुंग(भीमकाय पाषाण खण्ड तालाब के बीच मन्दिर अवस्थित) चारों ओर जलकुण्ड भी है मुनस्यारी से 25 किमी दूर गोरी गंगा व मन्दाकिनी संगम के किनारे ऊष्म जलस्रोत, तल्ला दुम्मर में अवस्थित भीमकाय गोलाकार (ल्वांल ढुंग) शिलाखण्ड जिससे सुनपति शौका के बंशजो की आस्था जुड़ी है। यही से कुछ दूर आगे सुरिनगाड में प्राकृतिक झरना स्थल है इसके आलावा बिथल्ढ झरना जो मुनस्यारी से 30, 35 किमी पूर्व बिर्थी गाँव के पास मोटरमार्ग पर खुबसूरत झरना पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षण में एक हैं। मुनस्यारी नामिक, रालम, मिलम हिमानियों तक पहुँचने का अन्तिम आधार शिविर भी है। मुनस्यारी आने वाले पर्यटकों को समस्त जानकारीया हेतु अच्छे गाइड की आवश्यकता अवश्य पड़ती है. राजू गाइड समस्त विषय की जानकारी देने के पश्चात अपने कार्य सन्तुष्टि का प्रमाण लेता है आप राजू गाइड से दूरभाष या मुनस्यारी पहुंकच सम्पर्क कर सकते है।

नानि कहानि

गौंत (गौमूत्र)

दीवान सिंह कठायत

प्लास्टिकक् खालि डाब् लीभेर प्रेमा सारि गौ चक्कर लगा आ पर ऊकै कती गौंत नै मिलि। लास्ट में सेमलधार हिरुलिक् पटांगण में पुजि रैछी, वीक् भैस्सी जंजीरैलि बाधि कटखना कुकुरैलि भौड़ाट पाड़ि द्यो। 'को छु ला?' भतरहै अवाज आ, 'मैं छु ओ दी प्रेमा, जरा गौंत चौन है रै छयू', 'अरे पै थ्वाड़ देर पैलि गंगा गौत्या ल्हिनैगे, आब् गौत छै नै? ख्याप्-ख्यापै छु'। 'ओ दी धै थ्वाड़ै द्विय्यै तूड़ुक् लै पड़ि जांछ्य डाबूनति, है जान्'। 'तती है रौ आ गयूं अल्लै, यो दूद उमाव जाणौ भीमै धरि बेर ओं।' हिरुलिक् कुकुर गिजन दिखाबेर आजि लै प्रेमा ही ग्वां-ग्वां करण में छ्यू। उ उति भिड़ में बैठि गे पर नजर कुकुरालै छी। 'बाबाहो इदुक दूर आछी गौंतैकि तै?' कैतै-कैते हिरुलि भ्यारकै आ। 'कि चौन पड़ौ यो आज?' भतराक् दिबातनक् पुज छू तभै बामणैलि मंगाराखो, ओ दी पैलाक्'। 'ज्यूजाग् हिट धैपै गोठ्।' जसै गौत्यूंण बैठनत् गोरूलि उदांग-उदांग काटि दे। 'तसै पणूं तौ भ्यौव, थ्वाड़ देर जागि जा। तै पाणि द्यूं फिर गौतल।' गोरुक् मुख ला एक बाल्टी पाणि धरि द्यो। आधु जस वील पी ल्यो। द्वियै खुटकूंण में बै भेर गोरुक गौतणाक् इंजार करण बै ग्या।

'इतांण गौ में कती गौत नै मिलि, पैलित गोरबाछ छन नै द्वि नक् छयात् ऊ लै ब्याण हीं' प्रेमा बोली। 'नै क्वे पावला जै नैत कहै आल्? त्वीले अफण गोर सोबनी कै दी द्यो ऊलि डान् छाड़ि द्यो, अछ्यान बीनागा बजारन पन घुमण। दूद गौंत सबनै चौन भ्यो पर पावण कवे नै चान्। मैं इकली सतरि सालैकि बुढ़ि आज लै पावणयूं मरण जानेक् पाऊंन। जैक गोठ गोर बाछ हुनान विक कुणिक आय् बढ़ीं स्याप किड़ नजिक् नै ऊंन। कुकुर बिराउत् पावणान धिनाइ अचौन है रै, बजार है मोल् ले ऊन कुनान। गोरबाछ नक् दिगाण दीन कटी जां, टैम बिटैम धौ धिनाइ है रों अफण आंग काम करणैलि छाव् हैरौ, मोव पन रस आ रौ। खाली बै भेरत् बिमारी लागि जै 'कैते रूणछी हिरुलि। प्रेमा ले शरमैलि मुनटौव करि दे। तदुक में तड़-तड़- तड़-तड़ गोर गौंतण बैठि, फटाफट प्रेमालि डाब भरि ल्यो। 'ओ दी मैं भोलहीं अफण गोर बीनाग है घर लाभेर पावूंन मैं कै आब् भौत पछ्त है ग्यो' कूंन-कूनै उ अफण घर ही जानै रै।

ज्योतिष की बातें - 164

5 फरवरी 2024 को मंगल समग्रह शनि की राशि मकर में प्रवेश करेगा। वहाँ पर कोई शुभाशुभ दृष्टि भी नहीं होगी। अतः मंगल कुछ निर्बल ही रहेगा। मंगल स्वास्थ्य, धैर्य, कर्मठता, साहस, आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, भ्राता-भगिनी, युद्ध एवं खेलकूद में निपुणता, नौकरी में अधिकार, कार्यों में सफलता, शत्रुओं पर विजय, भूमि-भवन-वाहन, यश एवं कीर्ति, मशीनरी, इंजीनियरिंग आदि का कारक होता है। फलदीपिका के अनुसार मंगल त्रिषडाय अर्थात् तीसरे, छठवें और ग्यारहवें स्थान पर शुभ होता है। साथ ही मंगल कर्क और सिंह राशियों के लिए योगकारक भी होता है अतः अगले 40 दिन मंगल वृश्चिक, सिंह, कर्क और मीन राशि के जातकों को अल्पमात्र में शुभफल प्रदान करेगा। अन्य राशि के जातकों को अभी प्रतीक्षा करनी चाहिए।

8 फरवरी 2024 को (स्थानभेदानुसार) बुध अस्त हो जाएगा अतः अगले 30 दिन बुध से प्राप्त होने वाले शुभफलों में कुछ न्यूनता प्रतीत होगी।

यहाँ पर केवल मंगल के गोचर का फल लिखा गया है, अन्य ग्रहों का नहीं। व्यक्तिविशेष के लिए सूक्ष्म फलादेश उसकी जन्मकुण्डली, महादशा आदि पर निर्भर करता है ।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 55

परिवार व्यवस्था पर संकट

अमेरिका में लगभग 50 प्रतिशत महिलाएँ अविवाहित हैं। लगभग ऐसी ही स्थिति चीन की भी है। और अब भारत में भी ऐसी स्थिति पैदा हो गई है। यहाँ पर पुरुषों से अधिक महिलाएँ विवाह नहीं करना चाहतीं हैं। एक सर्वे के अनुसार 49प्रतिशत पुरुष विवाह नहीं करना चाहते और 61 प्रतिशत महिलाएँ विवाह नहीं करना चाहतीं। बची हुई 39 प्रतिशत महिलाओं में जो महिलाएँ विवाह कर भी लेती हैं, वे सन्तान को पालना नहीं चाहतीं। यदि सामाजिक दबाव अधिक पड़ता है तो केवल एक ही सन्तान पैदा करके रह जाती हैं। ऐसी स्थिति में भविष्य बहुत ही गम्भीर है। चाचा-चाची, ताऊ-ताई, मौसा-मौसी, मामा मामी, जीजा-साली, देवर-भाभी, देवरानी-जेठानी, ननद-भोजाई आदि सम्बन्ध तो खत्म हो ही चुके हैं लेकिन अब तो एक ही सन्तान होने के कारण भाई-बहन का नाता भी लगभग समाप्ति की ओर है। ये सभी सम्बन्ध समाप्त होने पर परिवार व्यवस्था कहाँ रह पाएगी ? जब परिवार ही नहीं रहेगा तो धर्म कहाँ बच पाएगा? इस प्रकार धर्म, संस्कृति, सभ्यता सब कुछ नष्ट होने की कगार पर है। दूसरी बात यह भी है कि यदि यही स्थिति रही तो हजारों लाखों पीढ़ियों में वृद्धि को प्राप्त हुई प्रजा दो तीन पीढ़ियों में ही नष्टप्राय हो जाएगी। इस पर विचार करना चाहिए मेरे विचार से दाम्पत्य जीवन कितना भी कष्टपूर्ण हो लेकिन अविवाहित होने का कष्ट उससे भी कहीं अधिक होता है ।

-सरल

आपके पत्र

लोक सभा के चुनाव की तैयारी से पूर्व गाँवों के विकास की चिन्ता करें

अब वर्ष 2024 के कुछ समय बाद लोक सभा चुनाव होने जा रहे हैं, राजनीतिक दल अपनी अपनी तरफ से चुनाव की तैयारी में जुटे हुए हैं। राजनीतिक पार्टी चाहे वह सत्ता पक्ष या विपक्ष हों, सभी अपने प्रत्याशियों के पक्ष में कार्यकर्ताओं के साथ जगह जगह गाँवों व कस्बों में अपने अपने प्रचार के लिये जन सम्पर्क करेंगे। सभी नेता अपने चुनाव निकट देखकर भ्रमण की चिन्ता में लगे होते हैं तथा मतदाताओं से सम्पर्क करते रहते हैं लेकिन चुनाव समाप्त होने के बाद अगले चुनाव तक कोई सुध नहीं लेते हैं। उन्हें कोई मतलब नहीं होता है कि उनके क्षेत्र गाँव कस्बों के विकास की क्या स्थिति है तथा मूलभूत समस्याएं क्या हैं और उनके द्वारा चुनाव के दौरान क्या वादे किये गये थे।

दो महीने में लोकसभा चुनाव सम्भावित हैं और तैयारी के लिये सभी दल अपने प्रत्याशियों के साथ प्रचार प्रसार में लग चुके हैं। वोट मांगते समय इन नेताओं और इनके दलों से पूछा जाना चाहिये कि पहले जो वायदे किये गये थे उनका क्या हुआ। नेतागण दूसरे दल व सदस्य के प्रति टीका-टिप्पणी जरूर करेंगे लेकिन स्वयं अपनी स्थितियों पर कुछ नहीं कहेंगे। ऐसे में सभी से अपेक्षा की जाती है कि वह एक-दूसरे की धज्जियां उड़ाने के बजाए स्वयं की स्थिति में दृष्टि डालें, तभी जनता के सामने प्रस्तुत हों। राजनीति दलों के नेताओं से अपेक्षा की जाती है कि वह एक-दूसरे पर आरोप अप्रत्यारोप के बजाय अपनी स्वयं की स्थिति पर गौर करें कि वह कितने गहने पानी में हैं। जनता अब काफी समझ चुकी है वो उसी को वोट देगी जो जनता का परम हितैषी (ईमानदार, परिश्रमी व विकास को महत्व देने वाला हो) होगा। उसको नहीं जो दूसरे की धज्जियां उड़ाने वाला हो।

-नन्दा बल्लभ पाण्डे
ज्योलीकोट (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

छोटा कैलाश मंदिर में शिवरात्रि की तैयारी

भीमताल। प्रसिद्ध मन्दिरों में शुमार छोटा कैलास मन्दिर में आठ मार्च को आयोजित होने वाले शिवरात्रि मेले की तैयारी शुरु हो चुकी हैं। भीमताल विकासखण्ड के अन्तर्गत ग्राम सभा पिनरौ में स्थित इस मन्दिर में क्षेत्र का सबसे बड़ा मेला लगता है। इस बार तैयारी काफी पहले से होने लगी हैं।

जागेश्वर व्यापार मंडल का गठन

अल्मोड़ा। पनुवानौला में व्यापार मण्डल की बैठक जिलाध्यक्ष सुशील साह की अध्यक्षता में हुई। नई कार्यकारिणी में में गोपाल मेहरा अध्यक्ष, मनीष नेगी सचिव, जगदीश गैड़ा कोषाध्यक्ष, मधुसूदन बिनवाल विनोद वर्मा, राजेन्द्र सिंह बनौला, बची सिंह, राजेन्द्र सिंह सुयाल, नवीन बिनवाल, नारायण दत्त को संरक्षक मनोनीत किया गया। तय हुआ कि महीने का अन्तिम रविवार बाजार बन्द रहेगा।

गोरखनाथ धाम में होंगे विकास कार्य

चम्पावत। नेपाल सीमा से लगे तल्लादेश क्षेत्र के मंच स्थित गुरु गोरखनाथ्ज्ञ धाम में 27.39 लाख की लागत से पयटन औश्र धार्मिक सुविधाओं का विकास होगा। जिलाधिकारी ने कार्यदायी संस्था को कार्यों के की गुणवत्ता बनाए रखने एवं समय सीमा के भीतर कार्य पूरा करने के निर्देश दिए हैं। कार्यदायी संस्था उत्तराखण्ड पेयजल निगम संस्थान विकास एवं निर्माण निगम यहाँ गुरु गोरखनाथ की मूर्ति स्थापना के साथ्ज्ञ ही, धाम में चाहरदीवारी, रेन वाटर हार्वेस्टिंग टैंकों का निर्माण, गेट, टायलेट का विकास कराएगा।

चौना में बाहरी लोगों को भूमि नहीं

मुनस्यारी। चौना में ग्राम प्रधान गणेश जेठा की अध्यक्षता में हुई खुली बैठक में क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं पर चर्चा के अलावा कहा गया कि ग्राम की जमीन बाहरी लोगों को नहीं बेचेंगे। बाहरी लोगों की आवाजाही पर चिन्ता भी जताई। बैठक में प्रेम रावत, केदार देवली, हीरा देवी, ईश्वर सिंह मेहता, हरीश सिंह, पुष्कर पापड़ा, बाला सिंह चिराल, गंगा सिंह मेहता, तारा देवी आदि थे।

सूचना विभाग की झांकी प्रथम रही

देहरादून। गणतंत्र दिवस के अवसर पर परेड ग्राउण्ड में आयोजित मुख्य समारोह में विभिन्न विभागों द्वारा झांकियां प्रदर्शित की गई। जिसमें सूचना विभाग की झांकी को प्रथम स्थान मिला। यह पुरस्कार राज्यपाल गुरमीत सिंह, मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी एवं मुख्य सचिव डॉ. एस.एस. सन्धु द्वारा प्रदान किये गये। जिसे महा निदेशक सूचना बंशीधर तिवारी व संयुक्त निदेशक सूचना एवं नोडल अधिकारी के. एस. चौहान ने प्राप्त किया। सूचना विभाग ने विकसित उत्तराखण्ड झांकी का प्रदर्शन किया था।

आदि कैलास सड़क चौड़ीकरण में मकानों का बलिदान देना होगा

भारत-चीन सीमा को जोड़ने वाले तवाघाट एनएच के विस्तारीकरण की जद में आ रहे 300 मकानों का बलिदान देना होगा। घनी आबादी वाले बलुवाकोट, ग्वालगाँव, कालिका, निगालपानी, रांथी, जुम्मा में मकानों के अधिग्रहण के बाद उन्हें हटाने का काम प्रारम्भ किया जायेगा। सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण पिथौरागढ़ लिपूलेख तक एनएच को डबल लेन करने का काम तेजी से चल रहा है। भारत माला परियोजना में शामिल इस सड़क के चौड़ीकरण के लिए प्रथम चरण में ढुंगातोली से तवाघाट तक काम किया जाना है। द्वितीय चरण में तवाघाट से लिपुलेख तक सड़क के विस्तारीकरण का काम किया जायेगा। इस सड़क के चौड़ीकरण की में अभी ढुंगातोली के बिनिया गाँव से तवघाट तक 300 से ज्यादा मकान हैं। बलुवाकोट कस्बे में सड़क चौड़ीकरण की सर्वाधिक मार पड़ेगी। लिपुलेख सड़क के डबल लेन बनने के बाद आदि कैलास यात्रा काफी सुगम हो जायेगी और गुंजी तक सफर भी आरामदायक होगा।

'नशा नहीं रोजगार दो'४० वर्ष की यात्रा

अल्मोड़ा के छोटे से गाँव घंघुोली बसभीड़ा (चौखुटिया) में शुरू हुआ 'नशा नहीं रोजगार दो, काम का अधिकार दो' आन्दोलन 40 वर्ष पूर्ण कर चुका है। इसकी चालीसवीं वर्षगांठ पर आन्दोलन की जन्मस्थली बसभीड़ा में विकट हो रहे नशे और रोजगार के सवाल पर चिन्तन-मनन विचार-विमर्श के साथ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संयोजक पी.सी.तिवारी ने कहा कि इस आन्दोलन का नेतृत्व शुरुआती दौर में प्रखर युवा आन्दोलन का प्रतीक रही उत्तराखण्ड संघर्ष वाहिनी के हाथों में था। बसभीड़ा, चौखुटिया, मासी, भिकियासैंण, सल्ट, स्याल्दे, द्वाराहाट, सोमेश्वर, गरमपानी भवाली, रामगढ़, नैनीताल आदि जैसे क्षेत्रों में आन्दोलन का जबर्दस्त प्रभाव रहा। 2 फरवरी 1984 को बसभीड़ा में हुई आन्दोलन की पहली जनसभा में सर्वसम्मति से क्षेत्र में हर हाल में जुए व शराब पर रोक लगाने की घोषणा के साथ ही आन्दोलन शुरू हो गया था। उस आन्दोलन की प्रखरता ऊष्मा आज भी हमारे समाज का हिस्स है और इसमें भागीदार करने वालों के साथ ही हमारे युवा जुड़ रहे हैं। इस बात को जगह-जगह उठाया जाना चाहिये।

उत्तराखण्ड ओलंपिक गेम्स २० फरवरी से

हल्द्वानी। राष्ट्रीय खेलों की तैयारी के लिये प्रदेश में उत्तराखण्ड ओलम्पिक गेम्स का आयोजन होगा। 20 फरवरी से 20 मार्च तक अलग-अलग चरणों में उत्तराखण्ड ओलम्पिक गेम्स के अन्तर्गत खेल प्रतियोगिताएं होंगी। प्रदेश में अक्टूबर नवम्बर में 38वें राष्ट्रीय खेल भी प्रस्तावित हैं। राष्ट्रीय खेलों में पदक जीतने के लिए प्रदेश सरकार हर प्रकार से सुविधा देने की कोशिश कर रही है। राष्ट्रीय खेल की तैयारियां परखने और खिलाड़ियों के चयन के लिए प्रदेश स्तर का ओलम्पिक आयोजन है।

खेल विभाग और उत्तराखण्ड ओलम्पिक संघ की बैठक 20 फरवरी से 20 मार्च तक प्रदेश में उत्तराखण्ड ओलम्पिक गेम्स खेल कराने का फैसला लिया गया है। इसमें भारतीय ओलम्पिक संघ से मंजूर 38 खेलों की ही प्रतियोगिताएं होंगी। विभिन्न स्थानों पर होने के कारण दो से पांच ग्रुप में खेल प्रतियोगिताएं कराने की योजना है।

परिक्रमा

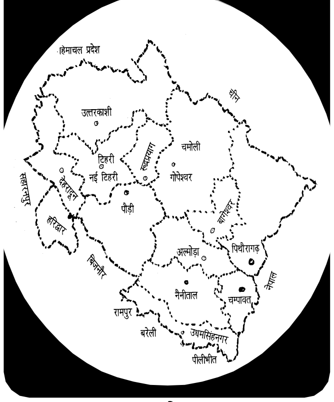

चम्पावत से गौलापार हेली सेवा

चम्पावत। जिला मुख्यालय के सर्किट हाउस से जल्द ही गौलापार, हल्द्वानी के लिए हेली सेवा शुरु होगी। 'उड़े देश का आम नागरिक' (उड़ान) योजना के तहत हेली सेवा शुरू करने को लेकर जिलाधिकारी नवनीत पाण्डे ने हेरिटेज एविएशन के जीएम मनीष भण्डारी ओर अन्य सम्बन्धित अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। हेरिटेज एविएशन के जीएम ने बताया कि हेरिटेज एविएशन की ओर से हल्द्वानी से चम्पावत के लिए जल्द ही हेली सेवा शुरू होगी। इसके लिये कम्पनी को मिनिस्ट्री ऑफ सिविल एविशन, भारत सरकार से अनुमति प्राप्त हो चुकी है। साथ ही यूकाडा से एनओसी भी मिल चुकी है। डीएम ने जल्द से जल्द हेली सेवा शुरू करने को लेकर एसडीएम सदर सौरभ असवाल और लोनिवि, जल संस्थान, सीएनडीएस को सभी आवश्यक व्यवस्थाएं पूर्ण करने के निर्देश दिए हैं। बताया है कि सात सीटर हेली सेवा दिन में दो बार (सुबह शाम) उड़ान भरेगी। अभी तिथि घोषित नहीं हुई है।

टनकपुर-बनबसा में पानी निकासी होगी

चम्पावत। टनकपुर-बनबसा में जल्द ही ड्रेनेज सिस्टम होगा। सिंचाई विभाग ने 130 करोड़ रुपये से बनने वाली योजना की डीपीआर शासन को भेज दी है। ड्रेनेज सिस्टम के होने से दोनों शहरों की आबादी को जल भराव की समस्या से छुटकारा मिलेगा। कार्यदायी संस्था सिंचाई विभाग ने टनकपुर और बनबसा में ड्रेनेज सिस्टम बनाने की दिशा में कदम उठाया है। इस कार्य में टनकपुर में 85 करोड़ और बनबसा में 45 करोड़ रुपये खर्च किये जाएंगे। कार्यदायी संस्था ने योजना की डीपीआर शासन को भेज दी है। बताते चलें कि हर बार मानसून काल में टनकपुर के ककरालीगेट, आमबाग, नगर क्षेत्र, बिष्णु पुरी कालोनी, ज्ञानखेड़ा, मनिहारगोठ, बिचई, सैलानीगोठ, फागपुर, सैनिक छावनी क्षेत्र, बनबसा, बमनपुरी, पचपकरिया सहित कई क्षेत्रों में जलभराव से जन जीवन प्रभावित होता है। अब हाईवे किनारे नाला बनना है।

बाजपुर में भूमि मामले पर आन्दोलन

बाजपुर। बीस गाँव की 5838 एकड़ भूमि को लेकर जारी आन्दोलन जारी है। कैबिनेट बैठक में मामले पर किसी निस्तारण की उम्मीद लगाए बैठे किसानों को जब पता चला कि उनकी बात पर कोई फैसला नहीं है तो और ज्यादा आक्रोशित हो गए। भारतीय किसान यूनियन के अध्यक्ष कर्म सिंह पड्डा ने कहा कि 6 माह से किसान सरकार की ओर टकटकी लगाए देख रहे हैं लेकिन सरकार की भूमि का मामला निस्तारित नहीं कर पाई। साथ ही मौजूदा महंगाई और खाद-बीज के दामों के अनुरूप गन्ना मूल्य नहीं बढ़ सका। किसानों की माली हालत देखते हुए कम से कम 400 रुपये प्रति क्विंटल गन्ना मूल्य निर्धारित होना चाहिये।

किसानों ने भूमि बचाने की प्रतिज्ञा को दोहराते हुए समाधान होने तक आन्दोलन जारी रखने की बात कही है। कहा कि हम अपने हकों की लड़ाई को जारी रखेंगे, इसके लिये चाहे कोई कुर्बानी देनी पड़े। इस मौके पर सतनाम सिंह, जसवीर सिंह, बिक्की रंधावा मौजूद थे।

जोशीमठ में जल्द पुनर्वास जरूरी

रुड़की। जोशीमठ में भूधंसाव के कारण लगभग 1200 घर हाई रिस्क में आ गए हैं। पहाड़ पर 14 पॉकेट ऐसी हैं, जहाँ पर ये सभी घर बने हैं और रहने के लिये सुरक्षित नहीं हैं। सीबीआरआई ने सर्वे के बाद शासन को अपनी रिपोर्ट सौंपते हुए पुनर्वास की सिफारिश की है। जोशीमठ में पिछले साल हुए भूधंसाव के बाद विभिन्न तकनीकी संस्थाओं की ओर से तकनीकी जाँच की गई है।

हमारी विरासत में राम और उत्तराखण्ड

कक्षा एक से इण्टर तक के लिये बनाई जा रही पुस्तक में श्रीराम के जीवन और उत्तराखण्ड में उनसे जुड़ी मान्यताओं की जानकारी शामिल की जाएगी। डीजी शिक्षा बंशीधर तिवारी के अनुसार पुस्तक में राज्य के धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक विशिष्टताओं को शामिल किया जाना है। श्रीराम से जुड़े प्राचीन 18 मन्दिरों के बारे में भी इस पुस्तक में जानकारी होगी।

२६ करोड़ की लागत से संवरेगा कैंची धाम

नैनीताल। कैंची धाम को 26 करोड़ की लागत से संवारने की तैयारी है। इसके लिये कई अन्य सुविधाएं जोड़ने और सुन्दरीकरण कार्य किये जाएंगे। बताया जा रहा है कि 21 करोड़ से तो टू टयर पार्किंग का निर्माण होगा, इसी में वाहन चालकों के लिए डारमेट्री निर्मित की जाएगी। नदी किनारे पाथवे आकर्षण का केन्द्र होगा।

मुंबई में उत्तराखण्ड कौथिग

मुम्बई में आयोजित कौथिग सीजन-5 का उद्घाटन मुख्यमंत्री पुष्कर धामी ने करते हुए कहा कि यह अद्वितीय आयोजन उत्तराखण्ड की सुन्दरा से परिचित कराएगा। उन्होंने प्रवासियों से आह्वान किया कि वह अपनी बोली-भाषा, संस्कृति के बारे में बच्चों को जरूर बताएं। अपने मूल निवास से जोड़े रखें। अपने देवता, अपनी कुल देवी-देवता का स्मरण रहे। मौके पर सुरेश राणा, भरत कुकरेती भी थे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

स्वास्थ्य

अत्यधिक ठंड से हाईपोथर्मिया की चपेट में बच्चे

जगमोहन रौतेला

एम्स ऋषिकेश ने जारी की हेल्थ एडवाईजरी

एम्स (ऋषिकेश)। नवजात बच्चे को स्वास्थ्य सम्बन्धी तमाम खतरों से बचाना एक बड़ी चुनौती है। कोहरे के कारण लगातार पड़ रही ठण्ड में नवजात की सही ढंग से देखभाल करना बहुत जरूरी है। इस सम्बन्ध में एम्स ऋषिकेश ने हेल्थ एडवाईजरी जारी की है।

जन्म से पहले बच्चा माँ के गर्भ में एक सुरक्षित और आरामदायक कवच में रहता है। जन्म लेने के बाद उसके लिए सबसे बड़ी चुनौती बाहर के वातावरण से सामंजस्य बैठाने की होती है। इसलिए जन्म से कम से कम 6 माह तक बच्चों को मौसम की मार से सुरक्षित रखना बेहद जरूरी है। यहां नवजात शिशु से तात्पर्य जन्म से 28 दिन की उम्र के शिशु से है। विशेषज्ञों के अनुसार उत्तराखण्ड में शिशु मृत्यु दर 34 प्रतिशत से अधिक है। आसय यह कि जन्म लेने वाले प्रति 1000 बच्चों में से 34 शिशुओं की विभिन्न कारणों के चलते मृत्यु हो जाती है। इन कारणों में से एक प्रमुख कारण यह है कि बीमार शिशु इलाज के लिए समय रहते अस्पताल नहीं पहुँच पाता है।

एम्स में नियोनेटोलॉजी विभाग की हेड प्रोफेसर श्रीपर्णा बासु ने इस बारे मे बताया कि घने कोहरे के कारण अत्यधिक ठण्ड वाले इस मौसम मे सबसे अधिक मामले हाईपोथर्मिया बीमारी से सम्बन्धित हैं। एम्स की नियोनेटॉलाजी विभाग की ओपीडी में 60 प्रतिशत शिकायत बच्चों को ठंड लगने से उत्पन्न विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित आ रही है। उन्होंने बताया कि हाईपोथर्मिया को सामान्य भाषा में बच्चे का ठण्डा पड़ जाना कहते हैं। खासतौर से ढाई किलो वजन से कम वजन वाले नवजात शिशु इस बीमारी से सर्वाधिक ग्रसित होते हैं। विभाग की एसोसिएट प्रो. डॉक्टर पूनम सिंह ने बताया कि जब शिशु के शरीर का तापमान 36.5 डिग्री सेल्सियस से कम होने लगता है तो वह हाईपोथर्मिया कहलाता है। हाईपोथर्मिया की शिकायत पर बच्चा सुस्त होकर दूध पीना बन्द कर देता है और धीरे-धीरे उसके खून में शर्करा की कमी होने से बच्चे की मृत्यु भी हो सकती है। उन्होंने बताया कि शिशु का सुस्त हो जाना, उसके पैर और पेट ठण्डे पड़ना तथा दूध पीना बन्द कर देना इस बीमारी के प्रमुख लक्षण हैं। क्या करें-

1- नवजात को हाईपोथर्मिया से बचाने का प्रयास जन्म से पहले ही शुरू हो जाता है। यदि किसी स्वास्थ्य केन्द्र में नवजात की देखरेख की व्यवस्था नहीं है तो गर्भवती माँ को सुविधा युक्त अस्पताल में ले जाकर ही डिलीवरी कराएं। 2- बच्चे को जन्म के पहले 1 घन्टे में नहीं नहलाएं। 3- बच्चे का बदन गुनगुने पानी से गीले कपड़े से पोंछें। 4- सर्दी के मौसम में बन्द कमरे में थोड़ी समय के लिए नहलाएं। इसके पश्चात सिर और बदन पोंछकर न्यूनतम 3 सतह मे कपड़े पहनाएं और टोपी, मौजे और दस्ताने जरूर पहनाएं और गर्म शॉल में ढककर लपेटें। 5- ध्यान रखें कि शिशु गीले कपड़े में न रहे। 6- कोहरे की ठण्डी हवा शिशु को नुकसान पहुँचा सकती है, इसलिए बच्चे को बन्द खिड़की से आ रही धूप में रखें। 7- बार-बार अपना स्तनपान कराएं ताकि बच्चे को खुराक और गर्माइश दोनों ही लाभ मिल सके। 8- कंगारू मातृ देखरेख का तरीका अपनाएं। यह विधि शिशु के शरीर का तापमान सन्तुलित बनाए रखने का सबसे अच्छी विधि है। इस विधि में माँ अपने बच्चे को दैनिक तौर से 8-10 घन्टे छाती से लगाकर दूध पिलाते हुए शिशु के शरीर को गर्माहट दे सकती है। 9- अस्पताल अथवा घर से बाहर जाते हुए प्रत्येक माँ अपने शिशु को कंगारू मातृ देखरेख विधि से बन्द वाहन से ही ले जाएं। खुले वाहन अथवा दुपहिया वाहन में ले जाने से बच्चे को ठण्ड से नुकसान हो सकता है।

> 'नवजात शिशुओं और बीमारी से ग्रस्त बच्चों का जीवन बचाना हमारी प्राथमिकताओं में शामिल है। एम्स ऋषिकेश में नवजात शिशुओं के इलाज के लिए नवजात गहन चिकित्सा इकाई (निओनेटल इंटेन्सिव केयर यूनिट) निक्कू वार्ड स्थापित है। यहाँ वार्मर बेड, वेंटिलेटर, पीलिया ग्रस्त शिशुओं के लिए ब्लड ट्रांसफ्यूजन सुविधा, समय से पहले प्रीमैच्योर शिशुओं के इलाज की सुविधा, अल्ट्रासाउण्ड और आवश्यकता पड़ने पर नवजात बच्चों हेतु सर्जरी की सुविधा भी उपलब्ध है।''
>
> -प्रो. मीनू सिंह
> निदेशक, एम्स ऋषिकेश

क्या न करें- 1- लक्षण नजर आने पर बच्चे को अस्पताल ले जाने मे विलम्ब न करें। 2- बच्चे को खुले वाहन में लेकर कतई न जाएं। 3- कोहरे और हवा में बच्चे को कमरे से बाहर न निकालें।

इन लक्षणों से भी रहें सचेत- बच्चे का दूध कम पीना, अचानक सुस्त हो जाना, सांस लेते हुए छाती में खड्डे पड़ना, मिर्गी के झटके, बुखार होना या शरीर का ठण्डा पड़ना, पैरों के तलवे और हथेलियों में पीलापन आना, नाभी के आस-पास लाली या उससे मवाद आना।

बचाव व सतर्कता- डॉ. पूनम सिंह ने बताया कि नवजात शिशुओं में उक्त में से किसी भी प्रकार के लक्षण नजर आने पर तत्काल अपने नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र ले जाएं। उन्होंने कहा कि जन्म से पहले 6 महीने तक माँ का दूध ही बच्चे के लिए सर्वोत्तम आहार होता है। बच्चे के स्वस्थ जीवन के लिए माँ का दूध और उसके शरीर की गर्माइश ही सबसे उत्तम दवा है। इस विधि को अपनाकर हम नवजात शिशु मृत्यु दर को भी कम कर सकते हैं। जहाँ तक एक माह से ज्यादा उम्र के छोटे बच्चों की बात है तो ऐसे बच्चों के सिर सहित पूरे शरीर की हलके हाथों से की गई मालिश उसकी स्किन को मझश्चर से भरपूर रखती है। साथ ही ब्लड सर्कुलेशन को भी सही रखती है। इससे बच्चे को नींद भी अच्छी आती है और उसका पूरा विकास होता है। मौसम में यदि अच्छी धूप है तो मालिश के बाद कुछ देर बच्चे को हल्की धूप में जरूर ले जाएं। इसके बाद साबुन रहित गुनगुने पानी से नहला दें। मालिश के लिए नारियल, जैतून या बादाम का तेल भी चुन सकते हैं।

कार्यालय नगर पालिका परिषद टनकपुर (चम्पावत)

नगर पालिका परिषद टनकपुर 26 जनवरी 2024, गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में नगर क्षेत्र की सम्मानित जनता को हार्दिक शुभकामनाएं देती है एवं नगर को स्वच्छ रखने का निवेदन करती है:-

1. नगर को स्वच्छ बनाने के लिये सड़कों पर कूड़ा न फेंके, कूड़ा कूड़ेदान में ही डालें।
2. नगर क्षेत्र को स्वच्छ बनायें रखने के लिये कृपया प्रतिबंधित सिंगल यूज प्लास्टिक उत्पादों का उपयोग न करें।
3. पॉलीथीन का प्रयोग न करें, वृक्ष लगायें, पर्यावरण बचायें।
4. खुले में शौच न करें, पालिका द्वारा निर्मित सामुदायिक शौचालयों का प्रयोग करें।
5. पालिका के करों का समय से भुगतान करें।
6. समस्त व्यापारियों एवं आम जनता से अनुरोध है कि, नगर पालिका के डोर टू डोर कूड़ा वाहन आने पर नगर पालिका द्वारा वितरित किये गये हरे व नीले डस्टबिनों में ही सूखा व गीला कूड़ा अलग-अलग दें।
7. अपने पालतू जानवरों गाय, भैंस, सुअर, कुत्तों को बाजार में खुला न छोड़ें।
8. नगर क्षेत्र को साफ सुथरा रखने में अपना बहुमूल्य सहयोग प्रदान करें ।
9. नगर की सफाई व्यवस्था सम्बन्धित शिकायतों के निस्तारण हेतु नगर की पालिका के हैल्पलाइन नम्बर पर सम्पर्क कर सकते है। हैल्पलाइन नं0. - 18003097473

(श्री भूपेन्द्र प्रकाश जोशी)
अधिशासी अधिकारी
नगर पालिका परिषद टनकपुर

(श्री आकाश जोशी)
प्रशासक
नगर पालिका परिषद टनकपुर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

'शक्ति प्रेस' अब जे.के.पुरम् में

हल्द्वानी। शहर के बीचोंबीच ऐश बाग कालाढूंगी रोड स्थित पुराने छापेखाने में गिना जाने वाला 'शक्ति प्रेस' अब जे.के. पुरम् सेक्टर डी, छोटी मुखानी हल्द्वानी में शिफ्ट हो चुका है।

हल्द्वानी शहर के इतिहास में तमाम आन्दोलनों का गढ़ रहा शक्ति प्रेस स्व. आनन्द बल्लभ उप्रेती द्वारा स्थापित किया गया था। 27 जनवरी 2024 को इसे पिघलता हिमालय के नये पते जे.के. पुरम् में शिफ्ट कर दिया गया है।

पुराने प्रेस का एक कक्ष

लोकसभा चुनाव....

प्रथम पृष्ठ का शेष

जाया जायेगा। भाजपा के प्रदेश महामंत्री खिलेन्द्र चौधरी ने बताया कि इस अभियान के तहत पार्टी के पदाधिकारी, पार्टी से जुड़े कार्यकर्ता और पार्टी से जुड़े रामभक्तों को अयोध्या के दर्शन के लिये ले जाया जायेगा। जिला स्तर पर इसके चयन की कार्यवाही चल रही है। अयोध्या जाने वाले सभी लोग अपना खर्च स्वयं वहन करेंगे। हालांकि उनकी सुविधा के लिये स्पेशल ट्रेन या बस सेवा आदि की व्यवस्था की जा रही है।

एक-दूसरे को मात देने के लिये बन रही रणनीति के क्रम में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे का आना कांग्रेस में जोश दिला गया है। भाजपा की मजबूती देखते हुए विपक्ष एकता को धार दी जा रही है। अन्तत: होना क्या है यह आने वाले दिनों में दिखाई देगा।

फोनिया के हस्ताक्षर हुई थी राम मन्दिर की भूमि

संस्मरण

वर्तमान में जब अयोध्या राम मन्दिर ही सर्वाधिक चर्चा में है तो इससे जुड़े पुराने ममालों पर भी बातचीज होने लगी है। बताते चलें कि राम मन्दिर की भूमि होने पर तत्कालीन पर्यटन मंत्री केदार सिंह फोनिया ने हस्ताक्षर किये थे। मंत्रिमण्डल की बैठक के दौरान अधिग्रहण की फाइल पर मंत्री फोनिया ने हस्ताक्षर किये।

उत्तर प्रदेश की कैबिनेट में जब उत्तराखण्ड से चुनिन्दा नेता होते थे उस दौर में राममन्दिर के लिये कानूनी लड़ाई के समय फोनिया की भूमि अधिग्रहण करने में अहम भूमिका रही। उन्हीं के हस्ताक्षर से अयोध्या के राम मन्दिर के लिये 2.77 एकड़ भूमि अधिगृहीत की गई थी। स्व. फोनिया 1992 में उ.प्र. सरकार में पर्यटन मंत्री थे। 20अक्टूबर 2092 की रात्रि उन्हें मुख्यमंत्री आवास में बैठक में बुलाया गया। सीएम कल्याण सिंह ने राम मन्दिर के लिये विवादित स्थल से लगी 2.77 एकड़ भूमि के अधिगृहीत किये जाने की तैयार फाइल पर सभी मंत्रियों से पूछा कि हस्ताक्षर कौन करेगा। तब पर्यटन मंत्री होने के नाते केदार सिंह फोनिया ने साइन करने की इच्छा जाहिर की। फाइल सामने आते ही उन्होंने हस्ताक्षर किये। इसके बाद अधिगृहीत भूमि पर एएसआई ने प्रारम्भिक खुदाई का कार्य किया था।

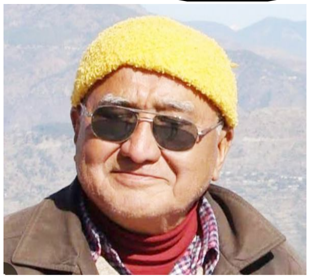

एएसआई के सर्वे के दौरान भी फोनिया कई बार अयोध्या गये थे।

बताते चलें कि सीमान्त जनपद चमोली के गमशाली में जन्मे केदार सिंह फोनिया बहुत ही सरल और व्यवहार कुशल व्यक्ति थे। उनके क्षेत्र के तत्कालीन प्रमुख व्यवसाई माधो सिंह हुए हैं। फोनिया ने प्रारम्भिक शिक्षा अपने ग्राम से के बाद मैसमोर कालेज पौड़ी से इण्टर किया और इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक किया। उनके सहपाठियों में दिग्गज भाजपा नेता मुरली मनोहर जोशी और भुवन चन्द्र खण्डूरी भी थे।

लोकसभा चुनाव ड्यूटी

लोकसभा चुनाव की तैयारियों के साथ ही ड्यूटियां लगने लगी हैं। सरकारी कर्मचारियों को सक्रिय कर दिया गया है ताकि चुनाव से पहले पूरी तरह से इन्तजाम हो जाएं। चुनाव से पहले जिला निर्वाचन अधिकारी कार्यों की समीक्षा कर रहे हैं। जोनल, सेक्टर मजिस्ट्रेड सहित अन्य ड्यूटियों की रणनीति बनाई जा चुकी है।

दूसरी ओर इस बीच शराब तस्कर भी सक्रिय हो चुके हैं। कुछ मामलों में पकड़ भी हुई है। गदरपुर थाना क्षेत्र में एक केंटर से 745 पेटी अंग्रेजी शराब बरामद हुई।

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by-
(माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

घर से बाहर
घर का सा
होटल
लक्ष्य इन
मदकोट
सम्पर्क
7351285555

MARTOLIA
FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग
मैटेरियल, भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी
(सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर)
गोदाम- जोहार एसोसिएट्स
बच्चीनगर- 1, कमलुवागांजा, हल्द्वानी
मो.- 7409440813, 7500619761

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

पूर्ण कालिक
संगीत प्रशिक्षण
केन्द्र
हिमालय संगीत
शोध समिति
जे.के.पुरम्, सेक्टर डी
छोटी मुखानी
हल्द्वानी
सम्पर्क- 9411563413

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)